विनाश के बादल

डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½

राम-रहीम

विनाश के बादल

लेखक: बिमल चटर्जी
चित्रांकन: त्रिशूल कॉमिको

पिछले अंक 'सिरफिरा वैज्ञानिक' में आप पढ़ चुके हैं कि भारत के एक वैज्ञानिक प्रोफेसर प्रदीप शर्मा ने एक ऐसी किरण का आविष्कार किया था, जिससे पहाड़ को पलक झपकते ही राई बनाया जा सकता था, समुद्र को सुखाया जा सकता था और रेगिस्तान व बंजर भूमि को आसानी के साथ उपजाऊ बनाया जा सकता था। भारत सरकार द्वारा इस आविष्कार के सम्बन्ध में काफी गोपनीयता बरतने के बावजूद भी न जाने कैसे इसकी खबर विश्व के एक भयानक अपराधी ब्लैक ड्रेगन और विश्व के अनेक देशों के साथ-साथ अमेरिका को भी लग जाती है। अमेरिका सीक्रेट सर्विस का चीफ अपने एक खतरनाक एजेन्ट टोरा उर्फ ट्रिपल थ्री को उस आविष्कार का फार्मूला उड़ाने भारत भेजता है और उधर अपराधी ब्लैक ड्रेगन अपनी अजीबोगरीब ह्वेलनुमा पनडुब्बी द्वारा प्रोफेसर की बेटी लता का अपहरण कर लेता है और प्रोफेसर को धमका कर एक जहाज में बुलाता है। प्रो॰ शर्मा राम-रहीम को सारी बात बताकर उनके साथ जहाज में पहुंचता है। वहां ब्लैक ड्रेगन का एक आदमी प्रोफेसर से मिलता है, लेकिन उनमें जो वार्तालाप होता है, उसे दूसरे कमरे में मौजूद राम-रहीम सुन लेते हैं और यह फैसला कर लेते हैं कि वे ह्वेलनुमा पनडुब्बी द्वारा अपराधी के अड्डे में पहुंचकर उसका खात्मा करेंगे और जब आधी रात के समय ह्वेलनुमा विशाल पनडुब्बी उनके जहाज का अपहरण करती है तो अकस्मात् लगने वाले झटके से राम-रहीम हवा में उछल जाते हैं और...
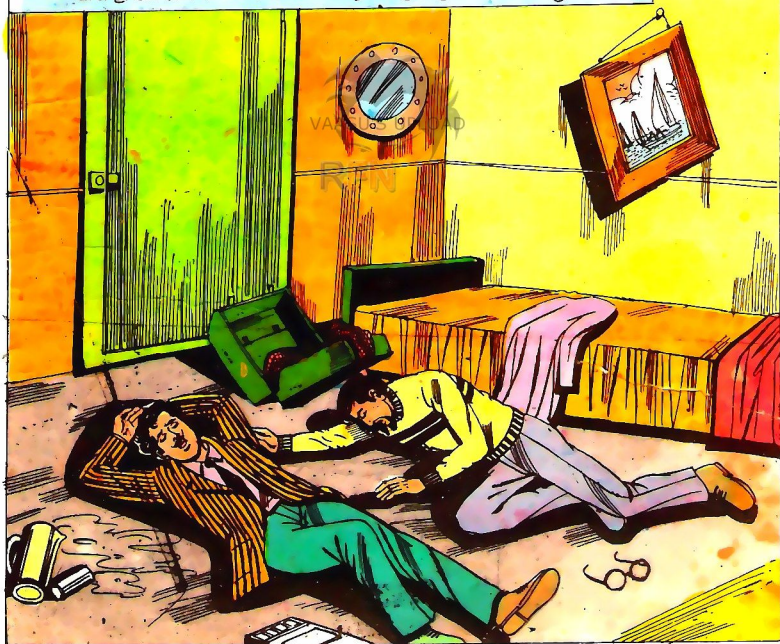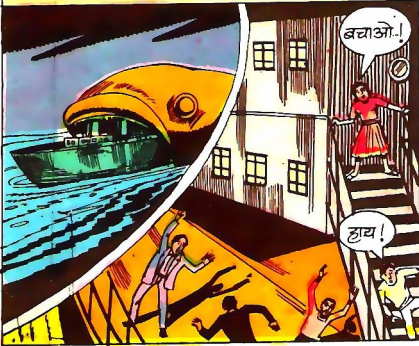
तब तक आधा जहाज ह्वेल के विशाल खुले हुये मुख में पहुंच चुका था और यात्रियों में कुहराम मचा हुआ था।
बचाओ!
हाय!
जहाज पर सवार कुछ मुसाफिरों ने घबराकर पानी में छलांगें लगा दीं।
देखते-ही-देखते ह्वेल समूचे जहाज को निगल गयी!
जबकि ह्वेलनुमा पनडुब्बी के भीतर—
पूरे जहाज को भीतर ले लिया गया है फोर वन!
देख रहा हूं नम्बर टू वन! तुम शटर बन्द करो और पनडुब्बी को नीचे ले चलो!
ओ.के.!
अगले ही पल उसने अपने सामने लगे कई स्विचों और कल-पुर्जों को दबाना और इधर-उधर करना आरम्भ कर दिया, जबकि एजेण्ट फोर वन अपने बॉस से सम्पर्क स्थापित कर रहा था।
हैलो-हैलो, स्टेशन जीरो... एजेण्ट फोर वन कालिंग... हैलो, जीरो स्टेशन— स्टेशन जीरो...
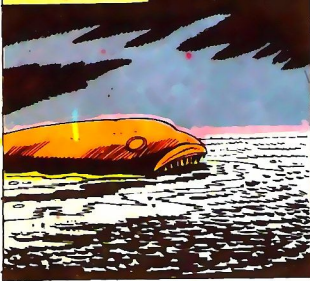
कोई सोच भी नहीं सकता था कि समुद्र के तल में उस किले के भीतर बसे एक छोटे-से शहर नुमा देश में आकाश भी होगा और उसमें एक छोटा-सा सूर्य भी अपने नियत समय पर उदय व अस्त होता होगा...
... रात के समय चांद-सितारे भी चमकते होंगे...
... तथा वह आकाश, सूरज, चांद और सितारे कृत्रिम होंगे...
... और यह सब उस छोटे-से देश के बेताज बादशाह एक सिरफिरे अपराधी वैज्ञानिक की दिमागी उपज होगी। लेकिन यह वास्तविकता थी। यह सारे अद्भुत आविष्कार एक सिरफिरे वैज्ञानिक ने ही किये थे और वह उस आश्चर्यजनक दुनिया का सम्राट था। उसका नाम था ब्लैक ड्रेगन, जो अपने अद्भुत व चमत्कारिक, किन्तु भयानक आविष्कारों की बदौलत पूरे विश्व पर शासन करने का ख्वाब देख रहा था।
हा...हा...हा... अब वह दिन दूर नहीं, जब पूरे विश्व पर मेरा साम्राज्य होगा।
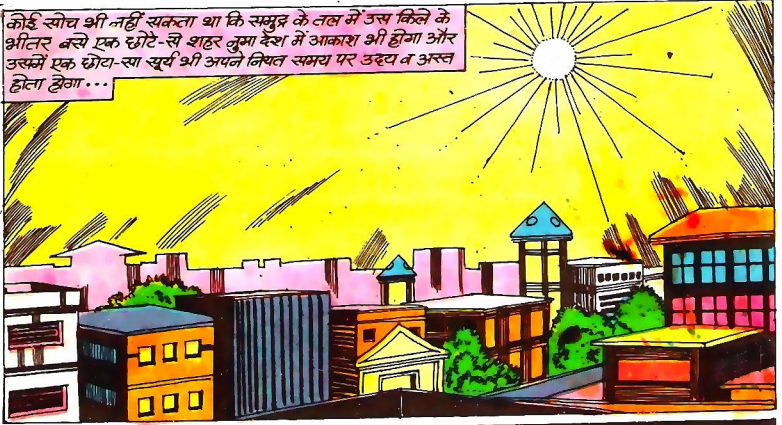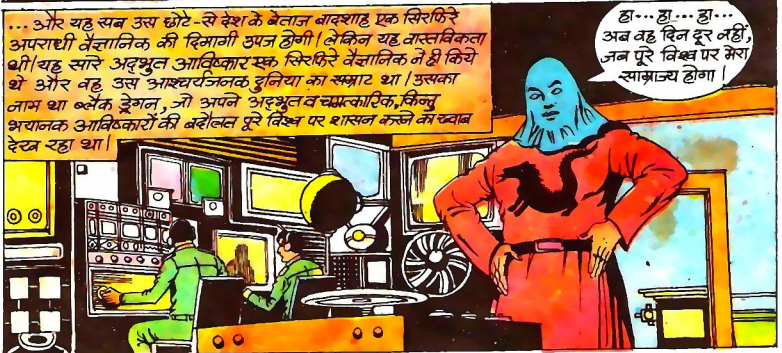
तभी एक व्यक्ति ने वहां प्रवेश किया —
महान् सम्राट ब्लैक ड्रेगन को एजेण्ट जैड का अभिवादन स्वीकार हो!
क्या रिपोर्ट है एजेण्ट जैड?
महामहिम, डैथ शिप से रिपोर्ट आई है कि प्रोफेसर शर्मा को जहाज समेत कब्जे में कर लिया गया है और अब कुछ ही देर में वे यहां पहुंचने वाले हैं।
वैरी गुड! डैथ शिप के किले पर पहुंचते ही प्रोफेसर को हमारे सामने पेश करना और बाकि यात्रियों को इंजेक्शन देकर उनकी योग्यता नुसार काम पर लगा देना। मैं तुम्हें कामन-हाल में मिलूंगा।
जो आज्ञा महामहिम!
कहकर एजेण्ट जैड वहां से चला गया।
एजेण्ट जैड के जाने के बाद —
हा... हा... हा... प्रोफेसर शर्मा, तुम और तुम्हारा आविष्कार मेरे मिशन के लिये निःसन्देह बहुत ही महत्वपूर्ण और लाभदायक सिद्ध होगा।
उसके बाद वह प्रयोगशाला से बाहर निकल कर लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ एक तरफ चल पड़ा।

और जब वह विशाल ह्वेलनुमा पनडुब्बी किले के चारों ओर फैले शीशे के गोले के निकट पहुंची तो शीशे के गोले में एक बड़ा-सा छिद्र उत्पन्न हुआ और उसमें से दस फुट व्यास का चालीस-पचास फुट लम्बा एक शीशे का पाईप निकलकर घूमता हुआ ह्वेल के मुंह में समा गया।
पाईप का कान्टेक्ट शिप के साथ हो चुका है, नंबर टू वन!
ठीक है, तुम अपने आदमियों को आदेश दो कि माल और यात्रियों को उठाकर स्टेशन जीरो से आनेवाले आदमियों की मदद करें।
ठीक है!
उधर शीशे के गोले से निकलकर पनडुब्बी के साथ जुड़े उस चालीस-पचास फुट के शीशे के पाईप का दूसरा सिरा किले के भीतर बनी एक बड़ी-सी इमारत के एक बड़े से कमरे से जुड़ा था।
जाओ, डैथ शिप में जाकर जहाज से यात्रियों और माल के साथ प्रोफेसर शर्मा को भी ले आओ, लेकिन सावधानी से।
यस सर!

फिर ब्लैक ड्रेगन के आदमी एक-एक करके सीढ़ियों से होते हुए उस गोल छिद्र में प्रवेश करने लगे...
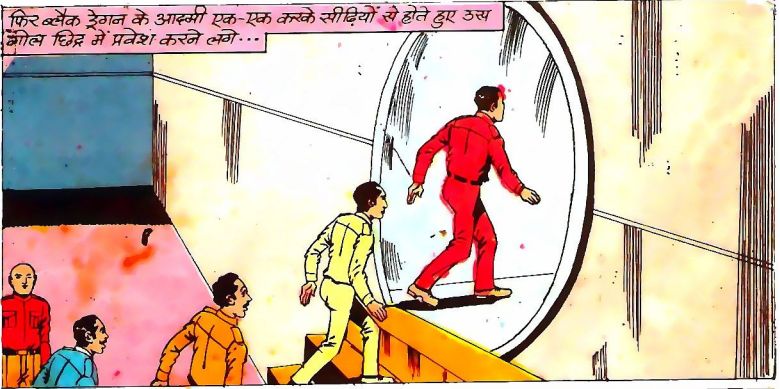
...और शीशे के पाईप के भीतर से होते हुए व्हेलनुमा पनडुब्बी की ओर बढ़ने लगे।
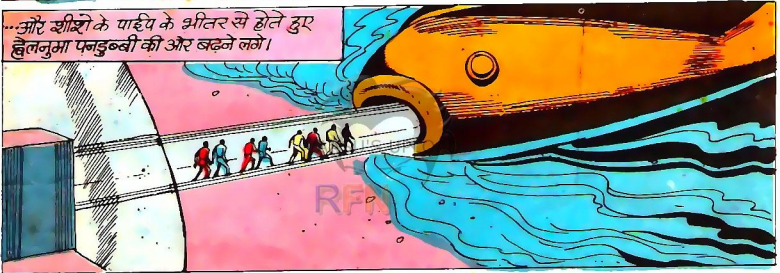
शीघ्र ही पनडुब्बी के भीतर मौजूद जहाज के अंदर पहुंचकर उन लोगों ने बेहोश यात्रियों को उठा-उठाकर पाईप के रास्ते से ही...
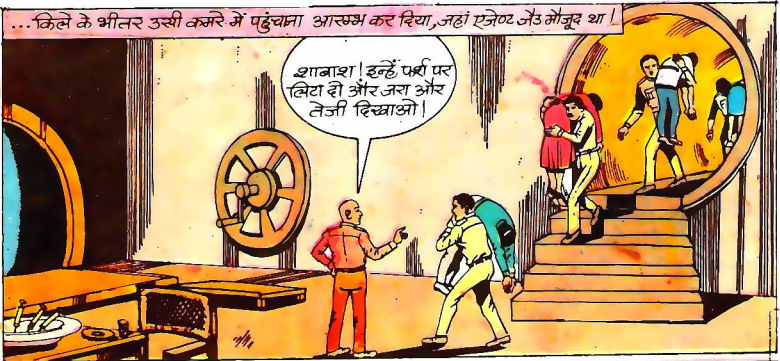
...किले के भीतर उसी कमरे में पहुंचाना आरम्भ कर दिया, जहां एजेण्ट जैउ मौजूद था।
शाबाश! इन्हें फर्श पर लिटा दो और जरा और तेजी दिखाओ।
जल्दी ही उन्हें प्रोफेसर शर्मा भी एक केबिन में बेहोश पड़ा मिल गया।
गुड! प्रोफेसर प्रदीप शर्मा यही है! इसे सावधानी से उठाओ।
ओ.के.!
लगभग एक घण्टे बाद यात्री-वाहक जहाज से सभी यात्रियों को उस कमरे में पहुंचा दिया गया।
सर! प्रोफेसर शर्मा सहित सभी यात्रियों को यहां लाया जा चुका है।
गुड! पाईप को भीतर ले लो तथा इन सब यात्रियों को बेहोशी में ही इंजेक्शन लगा दो, ताकि होश में आने के बाद ये खुद को भूल कर सिर्फ हमारे आदेशों के गुलाम हो जाएं।
यस्स सर!
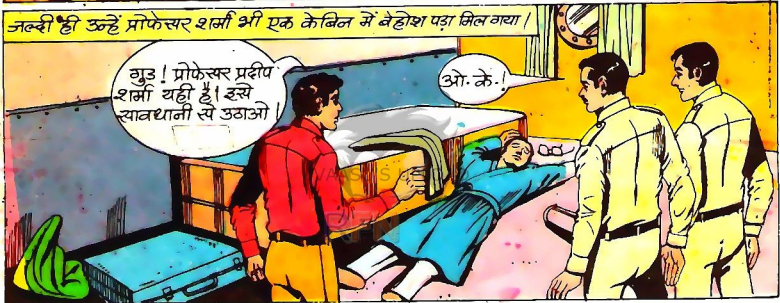
उसके बाद एजेण्ट जैड फर्श पर एक तरफ बेहोश पड़े प्रोफेसर शर्मा के निकट पहुंचा।
नम्बर सेवन, तुम प्रोफेसर को उठाकर मेरे साथ रूम नम्बर थर्टी थ्री में चलो।
ओ.के. सर!
अगले ही पल वह व्यक्ति प्रोफेसर को कंधे पर डालकर एजेण्ट जैड के साथ उस कमरे से बाहर निकल कर एक तरफ चल पड़ा।
उधर कमरे के भीतर नीली-पीली व लाल वर्दीधारी व्यक्ति जमीन पर बेहोश पड़े व्यक्तियों के सरों पर एक ऐसा इंजेक्शन लगाने में जुट गए, जिससे इन्सान का मस्तिष्क सुन्न हो जाता था। उस इंजेक्शन के प्रभाव से इन्सान देख, बोल, सुन और काम तो कर सकता था, लेकिन अपनी इच्छानुसार नहीं। वह वही काम कर सकता था, जिसका उसे आदेश दिया जाता। और दो व्यक्ति मशीन पर लगे एक हैंडिल को घुमाते हुए शीशे के पाईप को पनडुब्बी से अलग करने में जुट गये।
उन बेहोश व्यक्तियों में राम-रहीम भी थे, जिनके चेहरों पर मेकअप था। ब्लैक ड्रेगन के एक आदमी ने जैसे ही रहीम को इंजेक्शन लगाने के लिये उसका सर पकड़ा, सर पर लगी विग उतरकर उसके हाथ में आ गई।
आयं! मेकअप! कौन हो सकता है यह छोकरा?

उधर शीशे के पाईप के हटते ही व्हेलनुमा पनडुब्बी जिसका नाम 'डैथ शिप' था, पानी के भीतर ही चलती-चलती एक ऐसे स्थान पर पहुंची, जहां बीसियों जहाज गर्क हुए पड़े थे।
TATU
नम्बर टू वन, जहाज को बाहर कर दो। उसके बाद हमें स्टेशन लौटना है। आज का मिशन आसानी के साथ सफल हो गया। अब महामहिम के अगले आदेश तक हमारी छुट्टी ही छुट्टी रहेगी और कुछ दिन आराम में गुजरेंगे।
हां, मैं भी दिन-रात काम करता-करता बहुत थकावट महसूस करने लगा हूं और दिल से चाहता था कि कुछ दिन आराम करने को मिल जायें।
कहकर नम्बर टू वन ने अपने सामने फिर मशीन पर लगे कुछ बटनों को एक-एक कर दबाना आरम्भ कर दिया। उन बटनों के दबाने से पहले यान का व्हेलनुमा मुंह खुला, फिर उसमें से धीरे-धीरे वह जहाज बाहर निकलने लगा, जिसका उन्होंने रात ही अपहरण किया था।
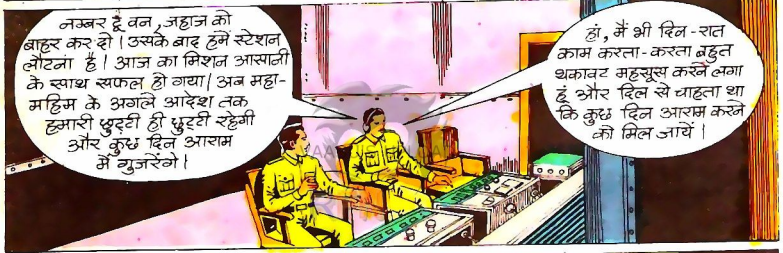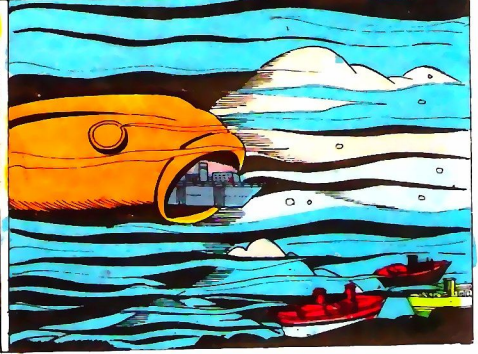
शीघ्र ही डैथ शिप उस जहाज को वहां छोड़कर वापस लौट पड़ा।
उधर किले के भीतर अब तक राम का भेद भी खुल चुका था।
आश्चर्य है, ये दोनों छोकरे जहाज में मेकअप में क्यों सफर कर रहे थे?
मुझे तो दाल में कुछ काला लगता है! कहीं ये दोनों जासूस न हों!
हो सकता है। मेरे विचार से इन्हें इन्जेक्शन न लगाकर पहले इन्हें महामहिम के सामने प्रस्तुत करना बेहतर रहेगा। यदि ये जासूस हुए तो महामहिम स्वयं इनसे सारी सच्चाई उगलवा लेंगे।
हां, यही ठीक रहेगा। तुम दोनों इन्हें ले जाओ और होश में लाकर महामहिम के सामने पेश करो। तब तक हम इन बाकी लोगों को होश में लाकर काम में लगाते हैं। इंजेक्शन लगाने का काम तो पूरा हो चुका है।
ठीक है।

उसके बाद दो व्यक्ति राम-रहीम के बेहोश शरीरों को कन्धे पर डालकर कमरे से बाहर की ओर चल पड़े और बाकी व्यक्ति फर्श पर मूर्छित पड़े व्यक्तियों को होश में लाने के प्रयत्न में जुट गये।
लगभग आधे घण्टे के परिश्रम के पश्चात् ब्लैक ड्रेगन के आदमी स्त्रियों-पुरुषों और बच्चों को होश में लाने में सफल हो गये। फिर अत्यंत ही बूढ़े एवं कमज़ोर लोगों को छांटकर एक तरफ कर दिया। होश में आने के बाद सभी जीवित पुतलों की तरह लग रहे थे।
नम्बर टैन, तुम और नम्बर ग्यारह, चौदह, पन्द्रह और बीस इन तन्दुरुस्त स्त्री-पुरुषों और बच्चों को लेकर प्वाइंट थ्री पर जाओ और सबको काम पर लगा दो। मैं इन बेकार लोगों को गैस चेम्बर में खत्म करने के लिये ले जाता हूं।
ओ.के.!
फिर नम्बर टैन जवान व स्वस्थ स्त्री-पुरुषों और बच्चों को भेड़-बकरियों के समान हांकता हुआ अपने साथियों के साथ एक तरफ चल दिया व एजेन्ट जैड अन्य लोगों को लेकर दूसरी तरफ बढ़ गया।

बूढ़े एवं कमजोर स्त्री-पुरुषों को शीशे के एक बड़े से चेम्बर में बंद कर उसमें जहरीली गैस छोड़ दी गई।
खों-खों-
आह!
उफ!
हाय! कोई बचाओ!
कुछ देर तक चीखते-चिल्लाते रहने के पश्चात् उन सबने तड़प-तड़पकर दम तोड़ दिया।
चलो, अब तुम सब इनकी लाशें ठिकाने लगा दो।
ओ.के.!
उधर नम्बर टैन स्वस्थ स्त्री-पुरुषों और बच्चों को लेकर किले के भीतर ही एक ऐसे स्थान पर पहुंचा, जहां पहले से ही असंख्य स्त्री-पुरुष व बच्चे खुदाई व पत्थर तोड़ने आदि का काम कर रहे थे। शायद वहां किसी इमारत आदि का निर्माण कार्य चल रहा था।
चलो, तुम सब ये फावड़े, कुदालें व तसले आदि लेकर खुदाई करने, पत्थर तोड़ने व मिट्टी उठाने के काम आदि में अपने मन पसंद के काम में जुट जाओ।
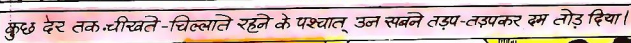
इधर एजेण्ट जैउ प्रोफेसर शर्मा को होश में लाने के पश्चात् ब्लैक ड्रेगन के पास लेकर पहुंचा।
मैं तुम्हारा स्वागत करता हूं प्रोफेसर! मुझे दुःख है कि यहां तक आने के लिये तुम्हें थोड़ा कष्ट उठाना पड़ा।
कौन हो तुम?
मुझे ब्लैक ड्रेगन कहते हैं। फिलहाल तो मेरे आदमी ही मुझे इस नाम से जानते हैं, लेकिन मुझे विश्वास है कि एक दिन दुनिया भी मुझे इस नाम से जानने लगेगी। हा...हा...हा...!
ओह! तो यही है ब्लैक ड्रेगन! जिसने मेरी बेटी का अपहरण किया है।
मेरी बेटी कहां है और तुम मुझसे क्या चाहते हो?
तुम्हारी बेटी सकुशल है प्रोफेसर और अभी कुछ ही देर में उसे तुमसे मिला दिया जायेगा। अब रहा मेरे चाहने का सवाल तो सुनो, मैं तुम्हारा वह किरणों वाला आविष्कार चाहता हूं...
...और चाहता हूं कि भविष्य में तुम उन किरणों को मेरे लिये, सिर्फ मेरे लिये तैयार करो, ताकि मैं जल्द-से-जल्द पूरी दुनिया को मुट्ठी में कर सकूं!
तुम्हारा यह सपना कभी पूरा नहीं होगा शैतान! मैं मरते मर जाऊंगा, लेकिन तुम्हारे लिये काम करना तो दूर, उस आविष्कार के फार्मूले तक की तुम्हें हवा नहीं लगने दूंगा...
...कुत्ते, वह आविष्कार मेरे देश की अमानत है और देश का यह तुच्छ सेवक उस अमानत की रक्षा के लिये अपनी बेटी तो क्या, सैकड़ों बेटियां कुर्बान कर सकता है!
अच्छा, हा...हा...हा...!

सुनो प्रोफेसर, तुमसे पहले भी दुनिया के बड़े-बड़े वैज्ञानिकों का अपहरण करके यहां लाया जा चुका है। पहले-पहले उन सभी ने अपने देश के प्रति ऐसी ही देश-भक्ति दिखाई थी, जैसी तुम दिखा रहे हो, लेकिन उसके बाद वे आज तक मेरे इशारों पर नाच रहे हैं और मेरे लिये नये-नये प्रयोग कर रहे हैं। जानते हो क्यों और कैसे?

कहकर ब्लैक ड्रेगन ने अपनी जेब से एक चौकोर-सी डिबिया निकालकर उसमें से एक लम्बी-सी सिरिंज निकाली, जो विचित्र बनावट की थी और उसे प्रोफेसर को दिखाते हुए बोला–
इस सिरिंज के कारण! इस सिरिंज में ऐसी दवा भरी है, जिसके शरीर में प्रवेश करते ही दिमाग में विरोध करने वाली नस सुन्न पड़ जाती है और वह व्यक्ति मेरे आदेशों का गुलाम बन जाता है...

...और प्रोफेसर, अब तुम्हारा भी मैं वही हाल करूंगा। इस सिरिंज में भरी दवा तुम्हारे मस्तिष्क में इंजेक्ट करने के बाद तुम भी उन लोगों की तरह इन्कार करने की स्थिति में नहीं रह जाओगे और एक वफादार नौकर की तरह मेरे लिये काम करोगे।
न... नहीं... नहीं! तुम ऐसा नहीं कर सकते!
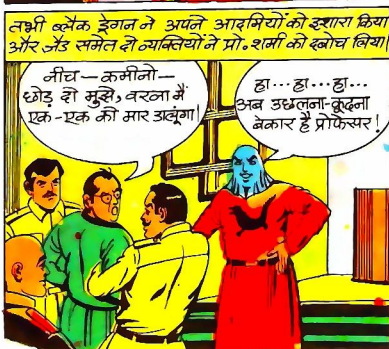
तभी ब्लैक ड्रेगन ने अपने आदमियों को इशारा किया और जैड समेत दो व्यक्तियों ने प्रो॰ शर्मा को दबोच लिया।
नीच — कमीनो — छोड़ दो मुझे, वरना मैं एक-एक को मार डालूंगा।
हा... हा... हा... अब उछलना-कूदना बेकार है प्रोफेसर!

और—
आह!

दवा इंजेक्ट होने के कुछ ही क्षणों उपरान्त—
महान् ब्लैक ड्रेगन की इस गुलाम का अभिवादन स्वीकार हो।
प्रोफेसर, क्या तुम अपने स्वामी के लिये काम करने के लिये तैयार हो?
यह गुलाम अपने महामहिम के लिये हर काम करने के लिये तैयार है। वक्त पड़ने पर जान देने से भी पीछे नहीं हटेगा।
गुड! तो बताओ तुम्हारा वह एक्स किरणों का फार्मूला तुम्हारे घर अथवा प्रयोगशाला में कहां रखा है?
वह रीडिंग रूम में बनी एक खुफिया अलमारी में है...
फिर प्रोफेसर ने उसे उस खुफिया अलमारी के विषय में सारी जानकारी दे दी।
लेकिन महामहिम, वहां से फार्मूला लाना बड़ा कठिन है। सरकार ने मेरी प्रयोगशाला की कड़ी सुरक्षा कर रखी है। सशस्त्र गार्डों के रहते हुए वहां बिना मेरी इच्छा के कोई परिन्दा भी पर नहीं मार सकता।
उसकी तुम चिन्ता न करो प्रोफेसर, परसों सुबह तक फार्मूला तुम्हारे सामने होगा।

एजेण्ट जैड, तुम रेड फोर्स के इंचार्ज से कान्टेक्ट करके उसे सारी बातों से अवगत कराकर आदेश दो कि वह फार्मूला परसों सुबह तक या कल रात तक हमारे सामने होना चाहिये।
यस सर!
एजेण्ट जैड तुरन्त कमरे से बाहर निकल गया।

एजेण्ट जैड के वहां से जाते ही प्रोफेसर की बेटी लता ने ब्लैक ड्रेगन के दो आदमियों के साथ वहां प्रवेश किया।
लो प्रोफेसर, अपनी बेटी से मिलो।
डैडी!
लता! मेरी बेटी!

तुम ठीक तो हो ना बेटी!
बिल्कुल ठीक हूं डैडी! इन लोगों ने मुझे आज तक कोई कष्ट नहीं दिया! बहुत अच्छे हैं ये लोग...

...डैडी, मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप महान ड्रेगन का साथ दें और इनके लिये भरसक काम करें।
यह भी कोई कहने की बात है बेटी! महामहिम का जो भी आदेश होगा, वह मुझे अपने प्राणों से भी बढ़कर प्रिय होगा!
ब्लैक ड्रेगन लता को भी वह इंजेक्शन लगा चुका था, जो उसने प्रोफेसर को लगाया था।

तभी-
महामहिम की जय हो!
अरे! राम-रहीम और यहां?

महामहिम, ये दोनों छोकरे मेकअप में हमें उसी जहाज से मिले हैं, जिसमें प्रोफेसर को लाया गया था!
ओह! तो इसका मतलब यह हुआ कि ये प्रोफेसर पर नजर रखे हुए थे!

तभी प्रोफेसर चीख उठा-
सावधान महामहिम, ये दोनों लड़के खतरनाक जासूस राम-रहीम हैं और आपके सबसे बड़े दुश्मन हैं। इन्हें तुरन्त मौत के घाट उतार दीजिये!
तुम ठीक कहते हो प्रोफेसर, लेकिन मैं इन्हें अभी नहीं, बल्कि उस समय मारूंगा, जब विश्व सम्राट बन जाऊंगा, ताकि ये खतरनाक जासूस मेरे कदमों पर नाक रगड़ते हुए बेबसी से खून के आंसू बहाएं और मैं इनकी बेबसी पर दिल खोलकर हंस सकूं!

राम-रहीम को यह समझते देर नहीं लगी कि उनके सामने खड़ा नकाबपोश ही ब्लैक ड्रेगन है, लेकिन प्रोफेसर का व्यवहार उनकी समझ में नहीं आया।
क्या इस शैतान ने प्रोफेसर अंकल पर कुछ कर दिया है या वे जान-बूझ कर कोई नाटक कर रहे हैं!
वाह! प्रोफेसर क्या जोरदार एक्टिंग कर रहे हैं, लेकिन यह लड़की कौन है? कहीं प्रोफेसर की बेटी लता ही तो नहीं?

क्या सोचने लगे बच्चो, यदि तुम प्रोफेसर और उसकी बेटी के बारे में सोच रहे हो तो बता दूं कि इस समय इन दोनों का दिमाग मेरे अधिकार में है। यही नहीं, बल्कि यहां मौजूद सभी लोगों का दिमाग मेरे कब्जे में है और वे केवल मेरे ही आदेशों का पालन करते हैं।
ओह!

खैर, क्या तुम यह नहीं जानना चाहोगे कि मैं कौन हूं?
हमने तुम्हें पहचान लिया है ब्लैक ड्रेगन, लेकिन हम यह जरूर जानना चाहेंगे कि तुमने समुद्र के तल में क्या षड्यंत्र रचा है तथा तुम प्रोफेसर की बेटी का अपहरण करके प्रोफेसर से क्या चाहते हो?
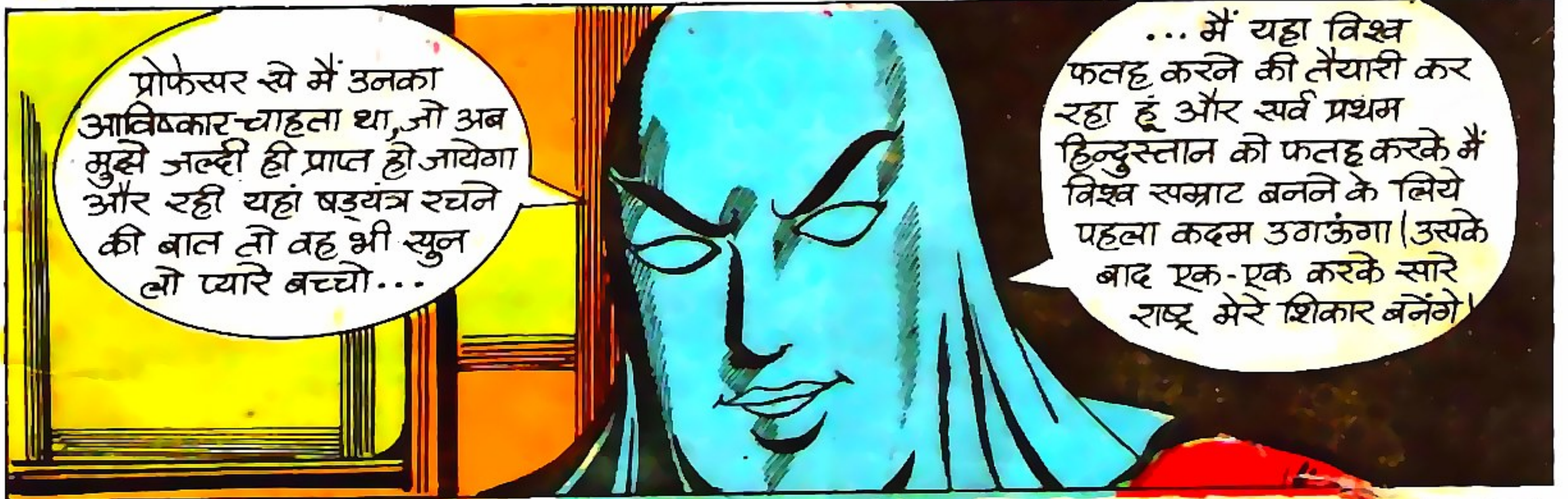
प्रोफेसर से मैं उनका आविष्कार चाहता था, जो अब मुझे जल्दी ही प्राप्त हो जायेगा और रही यहां षड्यंत्र रचने की बात तो वह भी सुन लो प्यारे बच्चो...
...मैं यहां विश्व फतह करने की तैयारी कर रहा हूं और सर्व प्रथम हिन्दुस्तान को फतह करके मैं विश्व सम्राट बनने के लिये पहला कदम उठाऊंगा। उसके बाद एक-एक करके सारे राष्ट्र मेरे शिकार बनेंगे।

ऐसा होना नामुमकिन है ब्लैक ड्रेगन। पूरे विश्व से एक साथ टक्कर लेना केवल सपने के सिवाए और कुछ नहीं।
हां ब्लैक ड्रेगन, तुम्हारी बात बिल्कुल हास्यस्पद लगती है। मेरी मानो तो अब भी वक्त है कि यह सब छोड़छाड़ कर अपने आपको कानून के हवाले कर दो, वरना बाद में पछताने का भी मौका नहीं मिलेगा।

तुम दोनों अभी मेरी शक्ति से परिचित नहीं छोकरो, वरना मुझे ऐसी बचकाना सलाह देने की हिम्मत कदापि नहीं करते। खैर, सुबह होने में कुछ ही समय बाकी है, फिर मैं तुम्हें अपनी शक्ति का नजारा एक बार जरूर दिखाऊंगा।
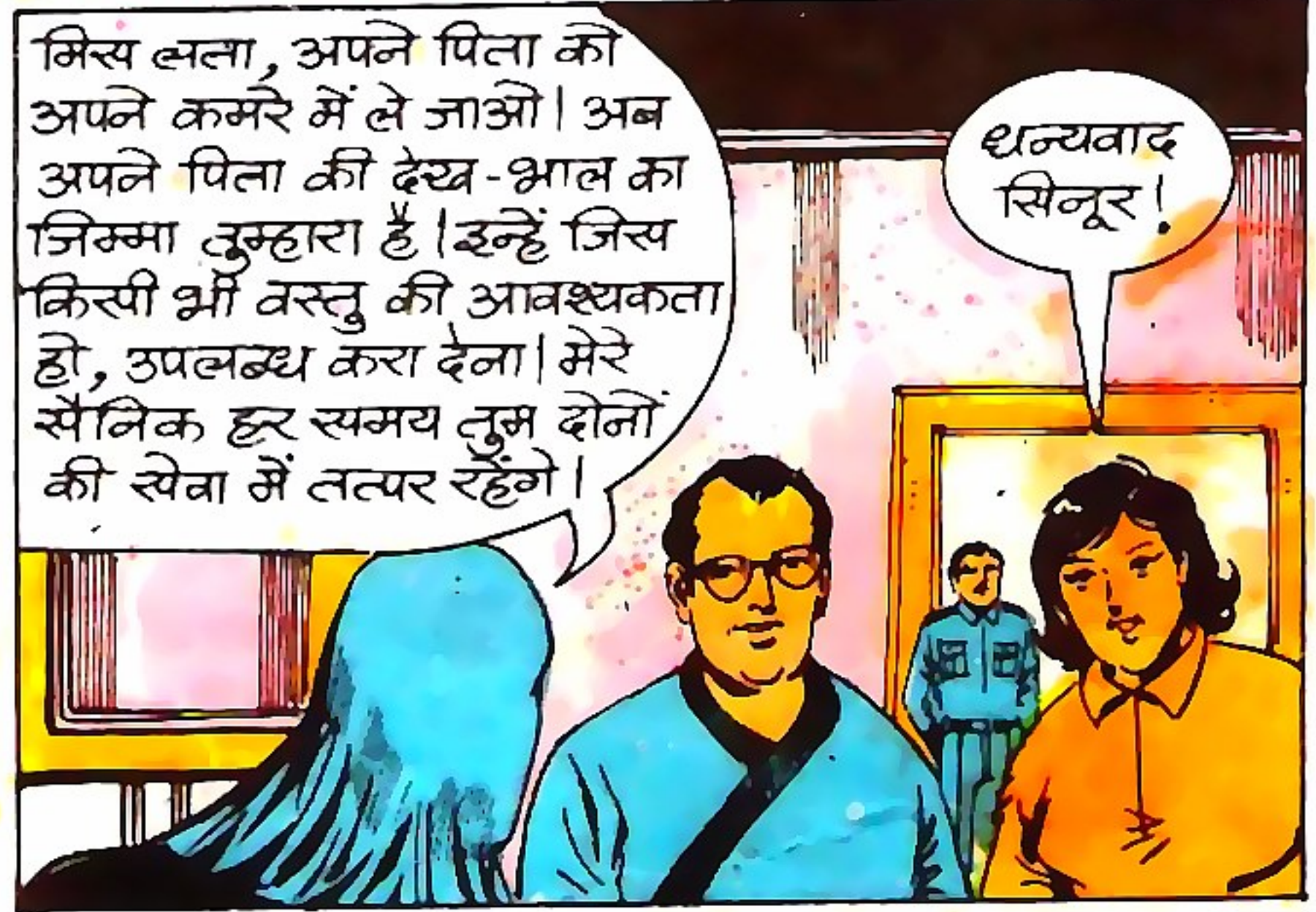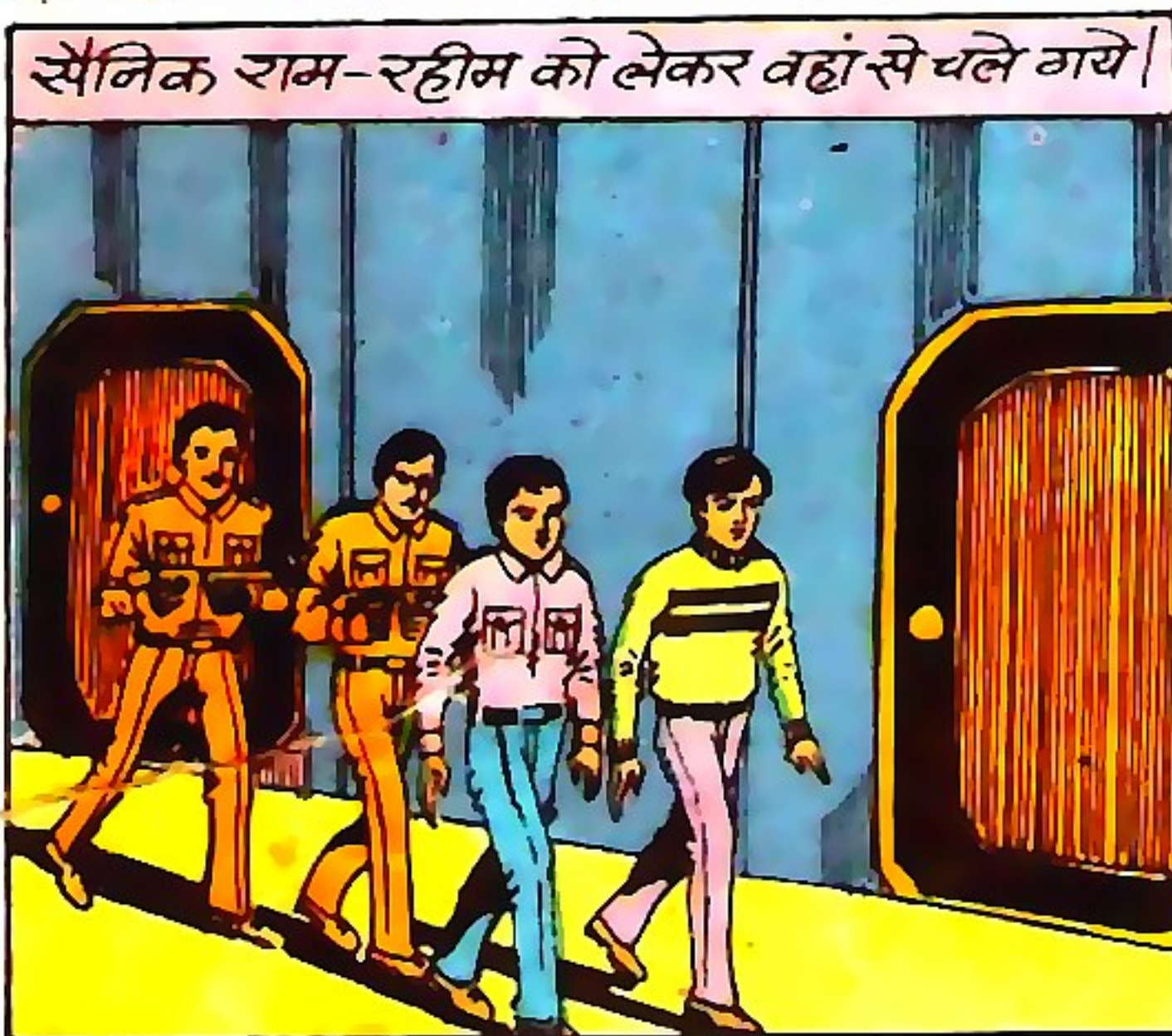
सैनिको, इन्हें ले जाओ और कैदखाने में डाल दो, लेकिन ध्यान रहे। जब तक मैं न कहूं, इन्हें हमारे कैदखाने में कोई तकलीफ नहीं होनी चाहिये। ये जो कुछ खाना-पीना चाहें, इन्हें दे देना, परन्तु सावधान! ये दोनों बहुत चालाक और खतरनाक लड़के हैं। अतः इनकी निगरानी में किसी किस्म की कोई लापरवाही नहीं होनी चाहिये।
जो आज्ञा महामहिम!

जाओ बच्चो, अब जाकर आराम करो। कल दिन के समय फिर मुलाकात होगी।
दूसरी मुलाकात का हमें भी उत्सुकता से इन्तजार रहेगा प्यारे काले जानवर!

सैनिक राम-रहीम को लेकर वहां से चले गये।

मिस लता, अपने पिता को अपने कमरे में ले जाओ। अब अपने पिता की देख-भाल का जिम्मा तुम्हारा है। इन्हें जिस किसी भी वस्तु की आवश्यकता हो, उपलब्ध करा देना। मेरे सैनिक हर समय तुम दोनों की सेवा में तत्पर रहेंगे।
धन्यवाद सिनूर!

और लता अपने पिता एवं साथ आये सैनिकों के साथ वापस लौट पड़ी।
कल दिन को मैं राम-रहीम के सामने सम्पूर्ण एशिया को एक चुनौती दूंगा, फिर देखूंगा कि उसका परिणाम क्या निकलता है!

राम-रहीम को एक इमारत के भीतर बने कैदखाने में डाल दिया गया। उस पूरे कैदखाने में शायद वही दो कैदी थे।
किसी चीज की जरूरत हो तो मांग लेना।

इसका मतलब तो यह हुआ राम भइया कि उसे इस बात का पूरा विश्वास है कि लाख चाहने के बावजूद भी हम उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

हां, वह अपनी शक्ति के घमण्ड में चूर है और यही घमण्ड एक दिन रावण की तरह उसे भी ले डूबेगा।

अगले दिन जब राम-रहीम सोकर उठे तो सुबह के ग्यारह बज चुके थे। उस कैदखाने के भीतर ही बाथरूम और टॉयलेट भी बने थे। अतः दोनों ने नित्य-क्रिया से फारिग होने में देर नहीं लगाई।
हम तो तैयार हो गये, लेकिन वे सैनिक...

परन्तु अभी रहीम अपनी बात भी पूरी नहीं कर पाया था कि—
लो, वे भी आ गये। शायद हमारे लिये नाश्ता-पानी लाये हैं।
अरे भाई, जल्दी लाओ ना। पेट में चूहे बुरी तरह उछल-कूद मचा रहे हैं।

अन्दर आकर सैनिकों ने राम-रहीम के बैड्स के बीच एक मेज रखकर उस पर नाश्ता लगा दिया।
जल्दी से नाश्ता कर लो। उसके बाद तुम्हें महामहिम के पास चलना है।
ठीक है-ठीक है, तुम बाहर जाकर हमारे नाश्ते से निबटने का इंतजार करो। हम नहीं चाहते की खाते समय तुममें से किसी की नजर हमें लगे।

सैनिक खामोशी से कैदखाने से बाहर चले गये और राम-रहीम नाश्ता करने में जुट गये।
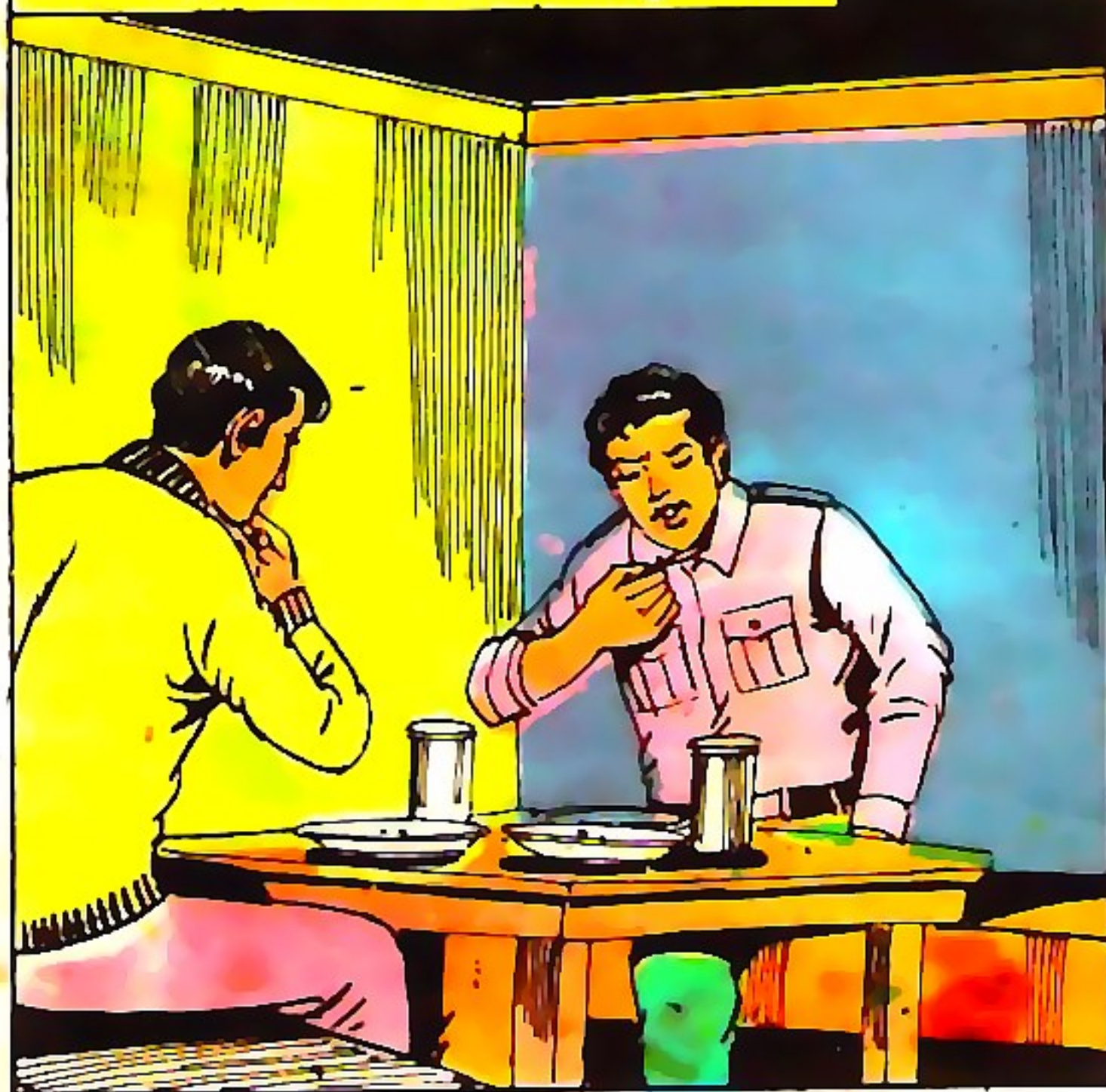
जब वे नाश्ते आदि से फारिग हुए तो सैनिक उन्हें संगीनों के साये में कैदखाने से निकालकर एक तरफ चल पड़े।

कुछ देर बाद सैनिक राम-रहीम को लेकर जिस कमरे में पहुंचे, वहां ब्लैक ड्रेगन के साथ-साथ प्रोफेसर शर्मा और उनकी बेटी लता भी मौजूद थी।
कहो प्यारे बच्चो, रात कैसी गुजरी? कोई तकलीफ तो नहीं हुई तुम्हें कैदखाने में!
जहां तुम जैसे शैतानों का साया इंसानों के रूप में मौजूद हो, भला वहां किसी को क्या तकलीफ हो सकती है प्यारे काले ड्रेगन!
फिलहाल मैं तुम्हारी किसी बात का बुरा नहीं मानूंगा बच्चे, क्योंकि मुझे विश्वास है कि एक बार मेरे स्टेशन और शक्ति का नमूना देखने के पश्चात् ऐसी बेहूदी बकवास करने की कल्पना तक नहीं करोगे तुम! अब आओ, मैं तुम्हें अपने स्टेशन की एक झलक दिखा दूं।
हां-हां चलो भाई, हम भी देखना चाहते हैं कि आखिर तुम अपनी कौन-सी मूर्खता पर इतना इतरा रहे हो!
चुप रहो रहीम, ज्यादा बोलना कभी-कभी नुकसानदेय बन जाता है।
राम और रहीम की बात सुनकर ब्लैक ड्रेगन मन-ही-मन मुस्कराकर रह गया।
फिर वह उसी इमारत के भीतर कई मार्गों से होकर प्रोफेसर, उनकी बेटी लता और राम-रहीम के साथ एक ऐसे बड़े से हाल में पहुंचा, जहां बीसियों व्यक्ति तरह-तरह के प्रयोगों में जुटे हुए थे। उनके वहां पहुंचने पर ब्लैक ड्रेगन को देखते ही उन्होंने एक बार सर झुकाकर उसका अभिवादन किया और पुनः अपने-अपने कार्यों में जुट गये।
इन लोगों को देख रहे हो राम-रहीम! ये दुनिया के सर्वश्रेष्ठ, योग्य और महान् वैज्ञानिक हैं तथा इस समय मेरे लिये तरह-तरह के अद्भुत आविष्कार व प्रयोग करने में जुटे हुये हैं। जिस दिन इनके आविष्कार पूरे हो जाएंगे, उस दिन मैं दुनिया का सर्व-शक्तिमान व्यक्ति हो जाऊंगा।
???

उसके बाद ब्लैक ड्रेगन उन्हें उस हाल से लेकर एक-दूसरे बड़े हाल में पहुंचा।
ये दुनिया के सबसे होनहार, बुद्धिमान और अपने-अपने काम में एक्सपर्ट इंजीनियर व मैकेनिक हैं, जो मेरे लिये ऐसे-ऐसे खतरनाक लड़ाकू विमानों और राकेटों का निर्माण कर रहे हैं, जो मन की गति से भी तेज रफ्तार से उड़ने की क्षमता रखते हैं। इस समय तो तुम इन्हें बनते हुए देख रहे हो, लेकिन जब ये तैयार होकर उड़ान भरेंगे तो इन पर दृष्टी रखनी मुश्किल हो जायेगी। इनमें खास बात यह होगी कि दुनिया का कोई भी राडार इन्हें कैच नहीं कर पायेगा।
फिर ब्लैक ड्रेगन उन्हें लेकर तीसरे हाल में पहुंचा।
अन्त में ब्लैक ड्रेगन उन्हें लेकर एक ऐसे हाल में पहुंचा, जहां चारों तरफ यंत्रों और मशीनों का जाल-सा फैला हुआ था और पचासों व्यक्ति उन यंत्रों और मशीनों के समक्ष बैठे अपने-अपने कार्य में जुटे हुए थे।
हा...हा...हा... और यह है मेरा शक्तिशाली स्टेशन, जिसका नाम मैंने स्टेशन जीरो रखा है। यहां से मैं न केवल पूरी दुनिया से रेडियो सम्पर्क कर सकता हूं, बल्कि जब चाहूं पूरी दुनिया पर आक्रमण भी कर सकता हूं। आओ, अब मैं तुम्हें अपनी वैज्ञानिक शक्ति का एक छोटा-सा नमूना दिखाता हूं।
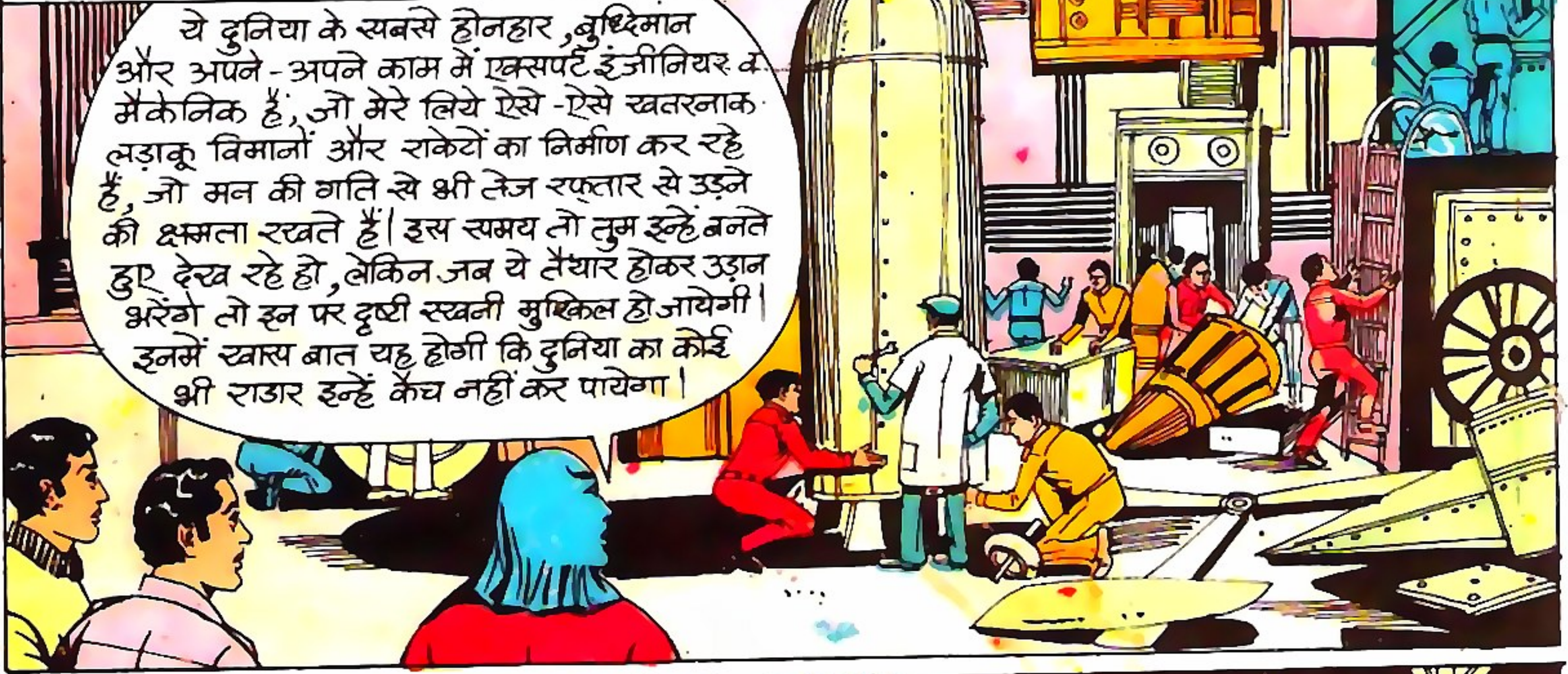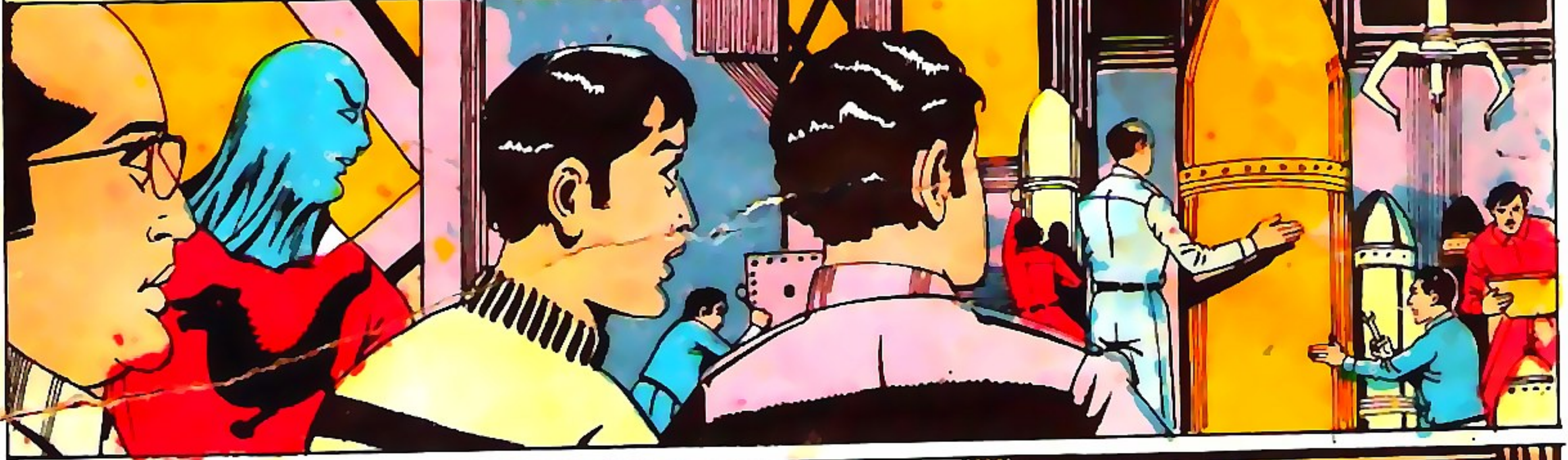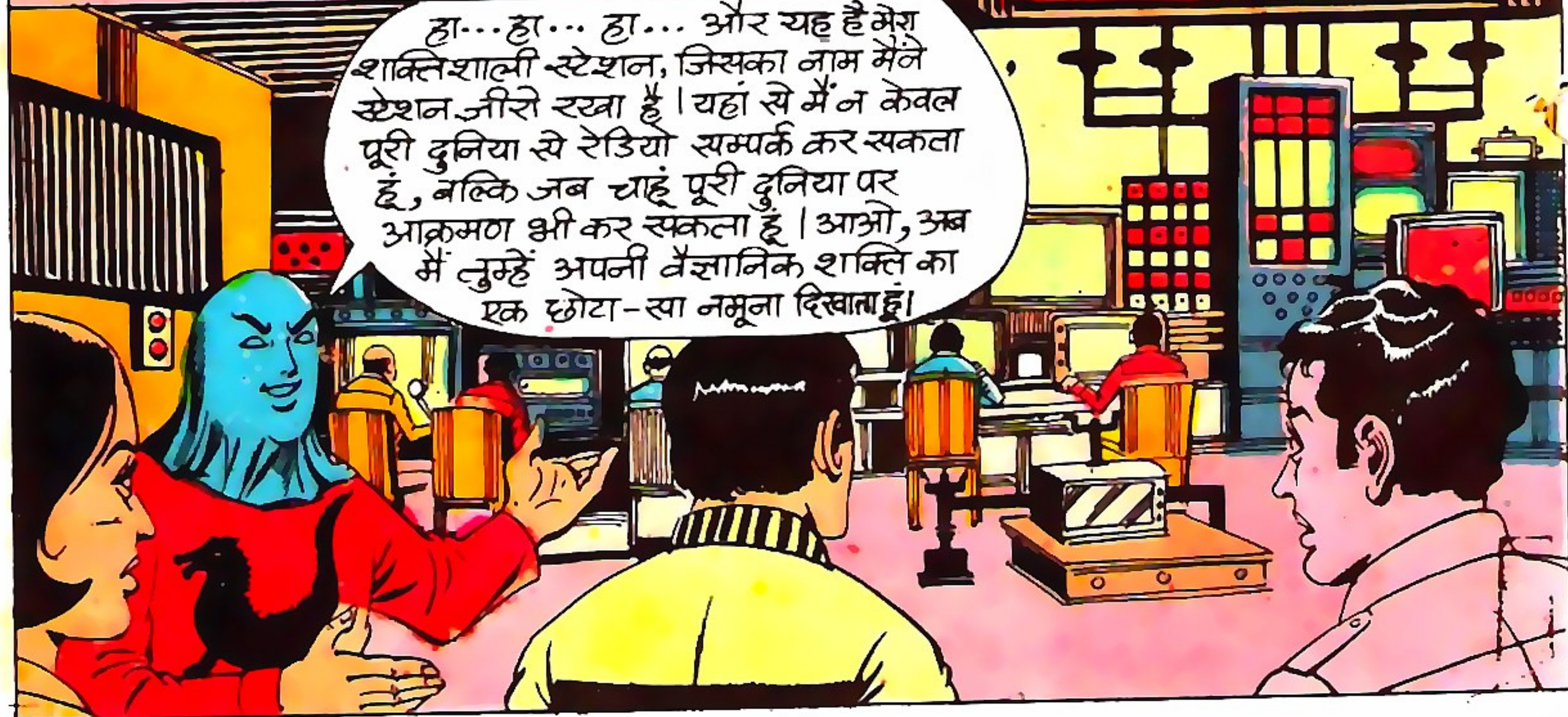
मि० जोजफ, क्या तुमने मेरे आदेशानुसार सारी तैयारियां पूरी करलीं?
यस मास्टर!
तो ठीक है। आपरेशन स्टार्ट करो।
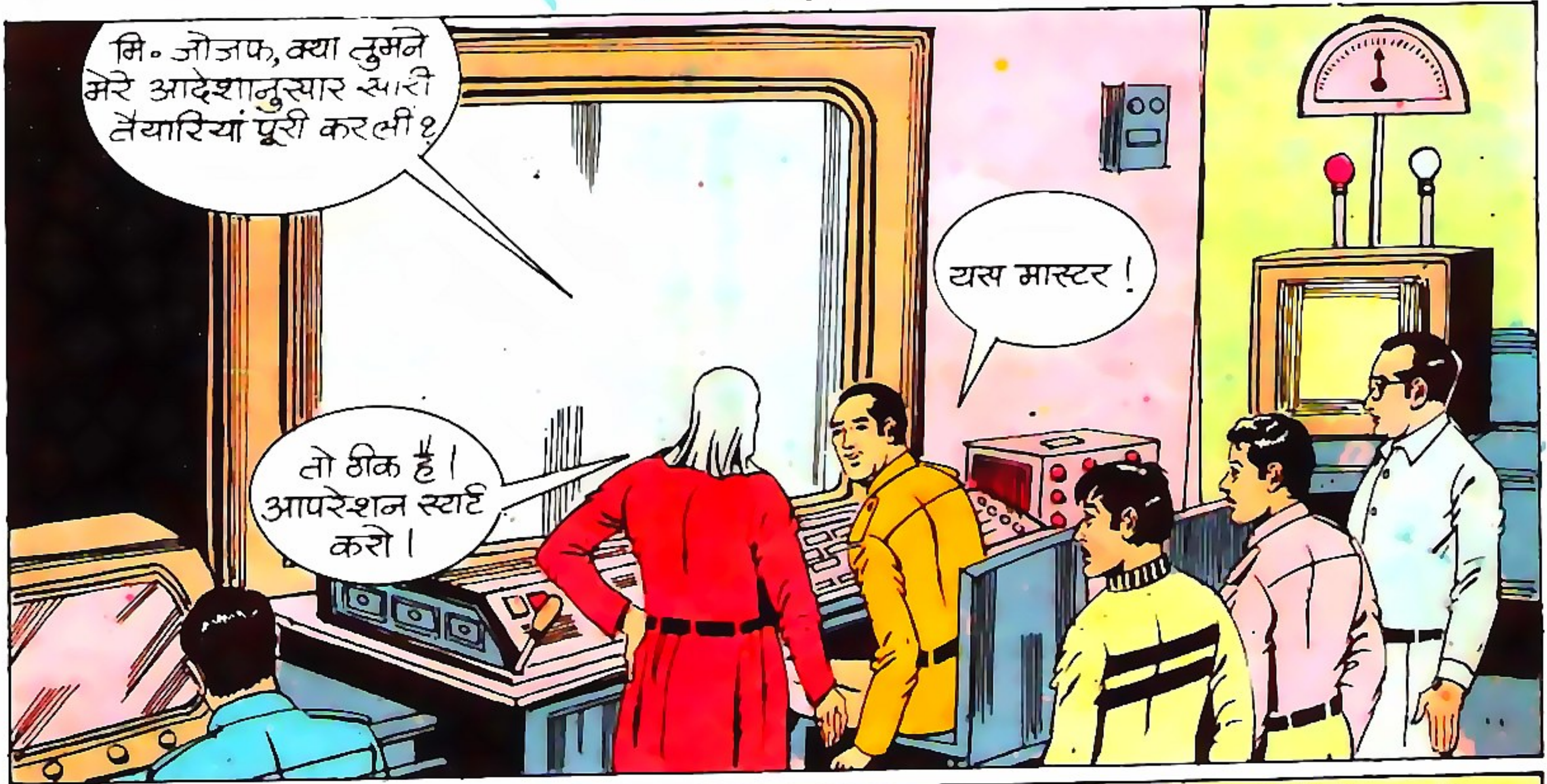
ब्लैक ड्रेगन के आदेश देते ही उस व्यक्ति ने अपने सामने लगे असंख्य बटनों और स्विचों में से कुछ को खटाखट दबाना आरम्भ कर दिया। अगले ही पल स्क्रीन प्रकाशमान हो उठी और उसमें आकाश और सूर्य दिखाई देने लगे।
देखो, यह तुम्हारी दुनिया का आकाश और सूर्य है!

जोजफ, विनाश के बादल सूर्य पर छोड़ो और दिन को रात में बदल दो।
ओ.के. महामहिम!
कहने के साथ ही...
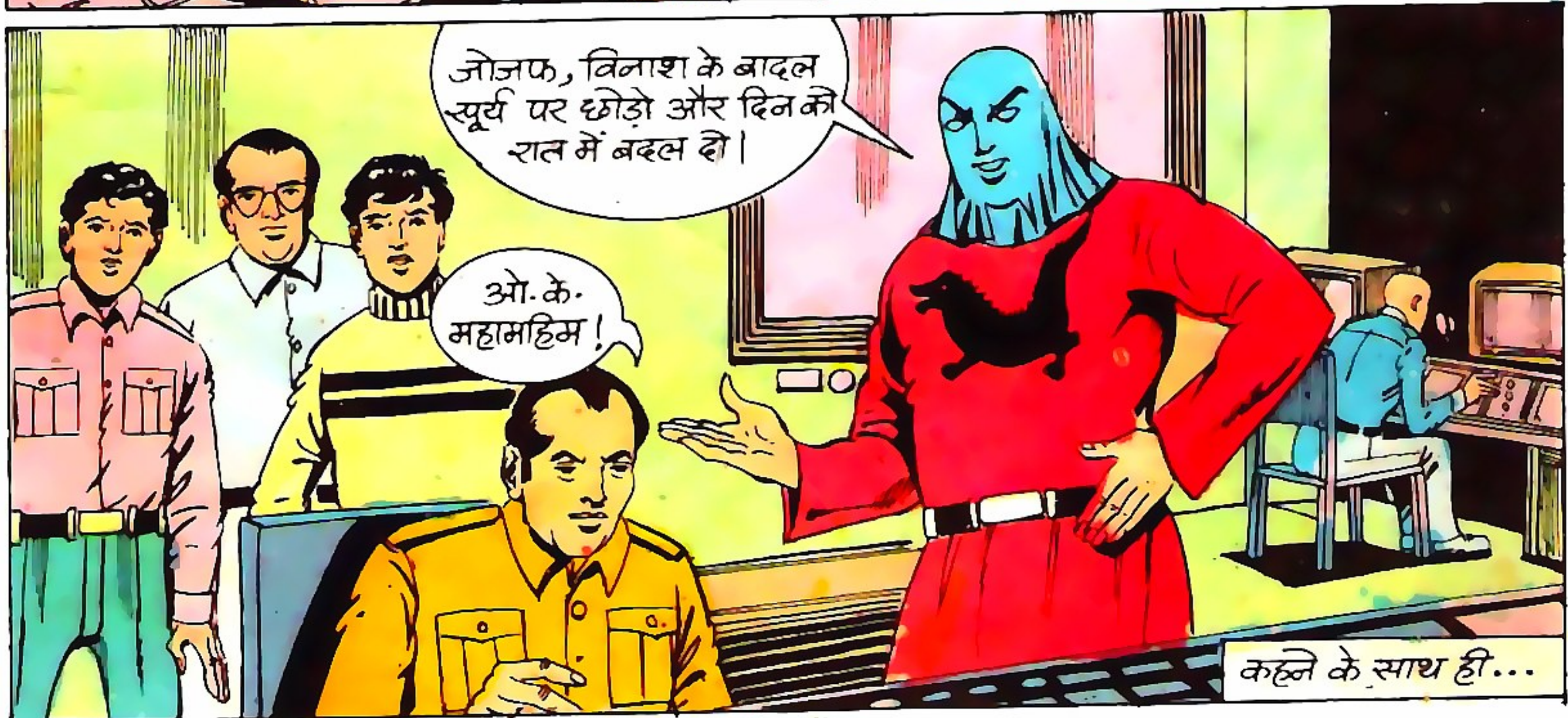
...जोजफ ने पुनः कुछ बटनों को दबाया और उन बटनों के दबाते ही किले के चारों ओर बने शीशे के गोले के ठीक ऊपर एक ड्रेगन का मुंह निकल आया।

फायर!
ब्लैक ड्रेगन का कहना था कि जोजफ ने एक और बटन दबा दिया। उस बटन के दबते ही एक भयानक गड़गड़ाहट के साथ गोले के ऊपर उभरे ड्रेगन के मुंह से एक मछलीनुमा राकेट निकला और...
गड़--गड़--गड़--
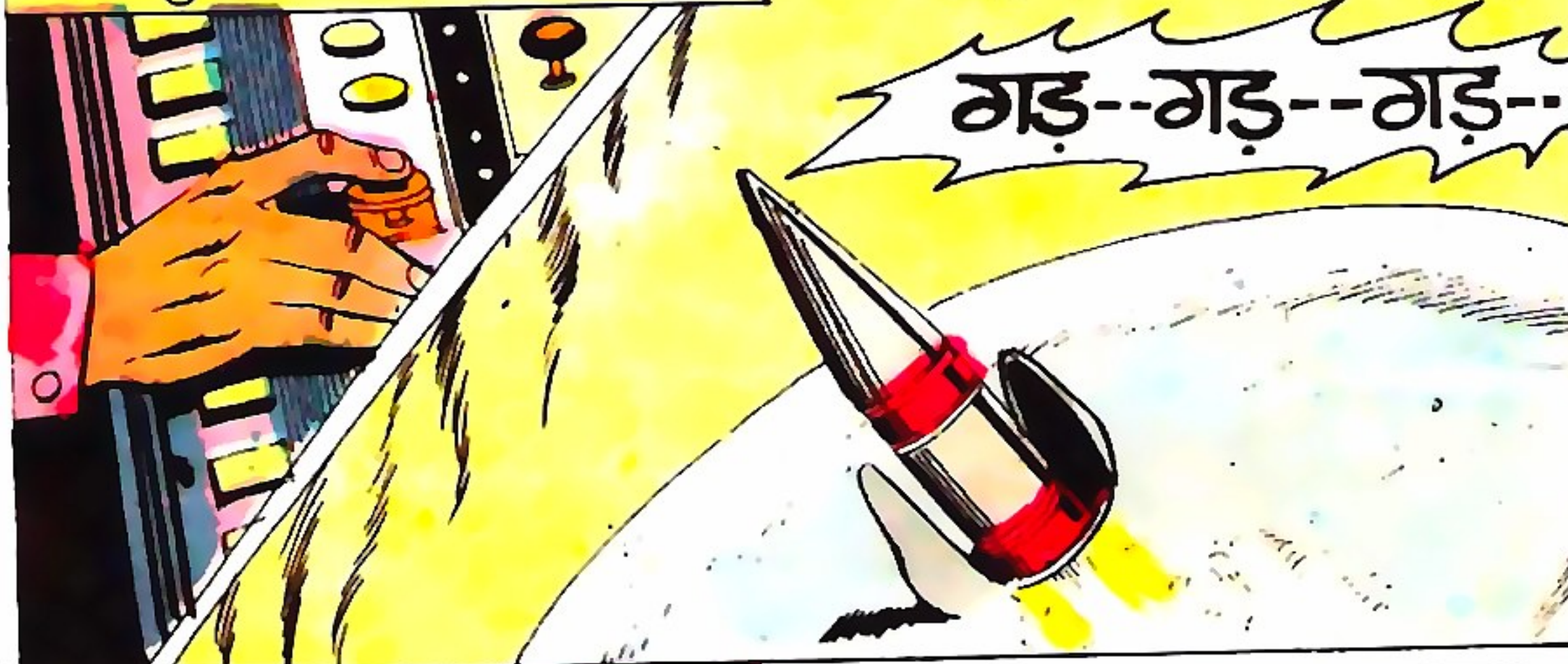
...समुद्र का सीना चीरता हुआ तीव्र गति के साथ ऊपर उठने लगा।

पलक झपकते ही वह मछली नुमा राकेट समुद्र से बाहर निकला और बिजली कीसी कोंध के साथ आकाश की ओर बढ़ने लगा।
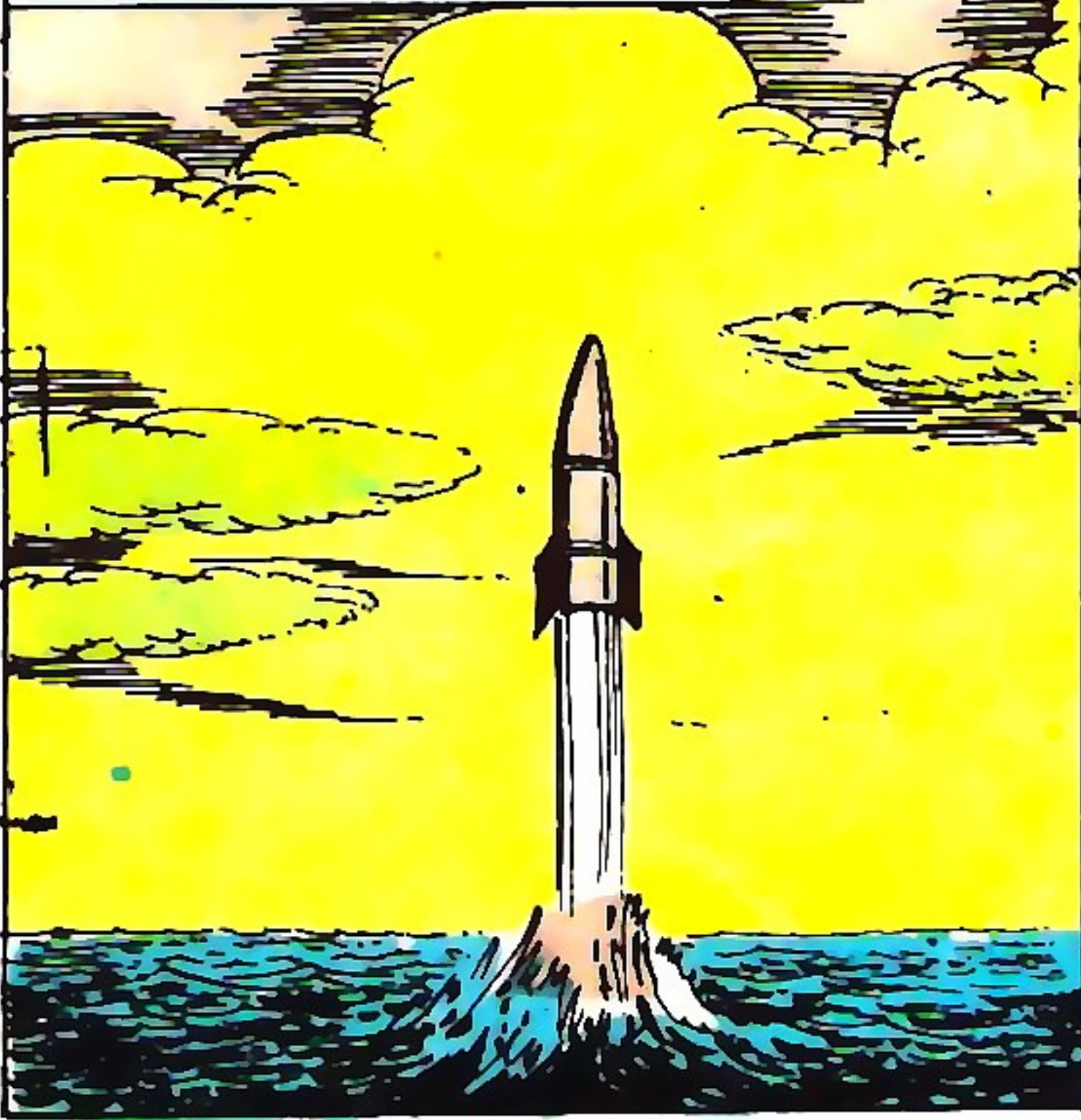
लगभग पन्द्रह मिनट पश्चात् सूर्य के निकट पहुंचकर वह मछलीनुमा यान उसकी गर्मी से फट गया...
धड़ाम्

...और फिर उस यान से निकलने वाले धुएं के दरिया ने सूर्य को अपने भीतर छुपाना आरम्भ कर दिया।
हा...हा...हा...अब चन्द ही मिनटों के भीतर पूरा भारत अंधकार में डूब जायेगा।
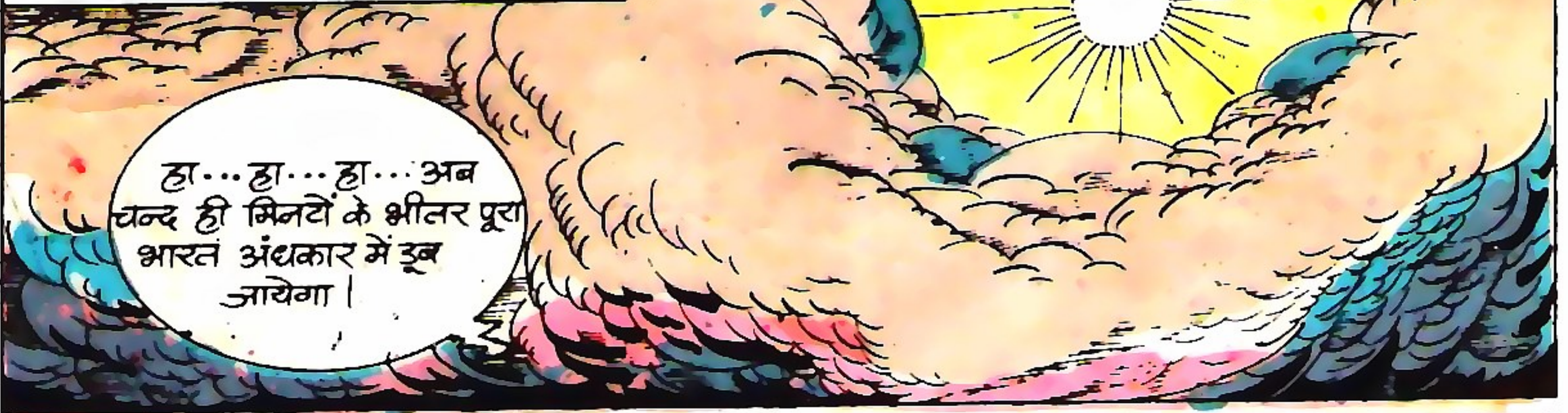
इधर भारत की धरती पर दोपहर के समय...
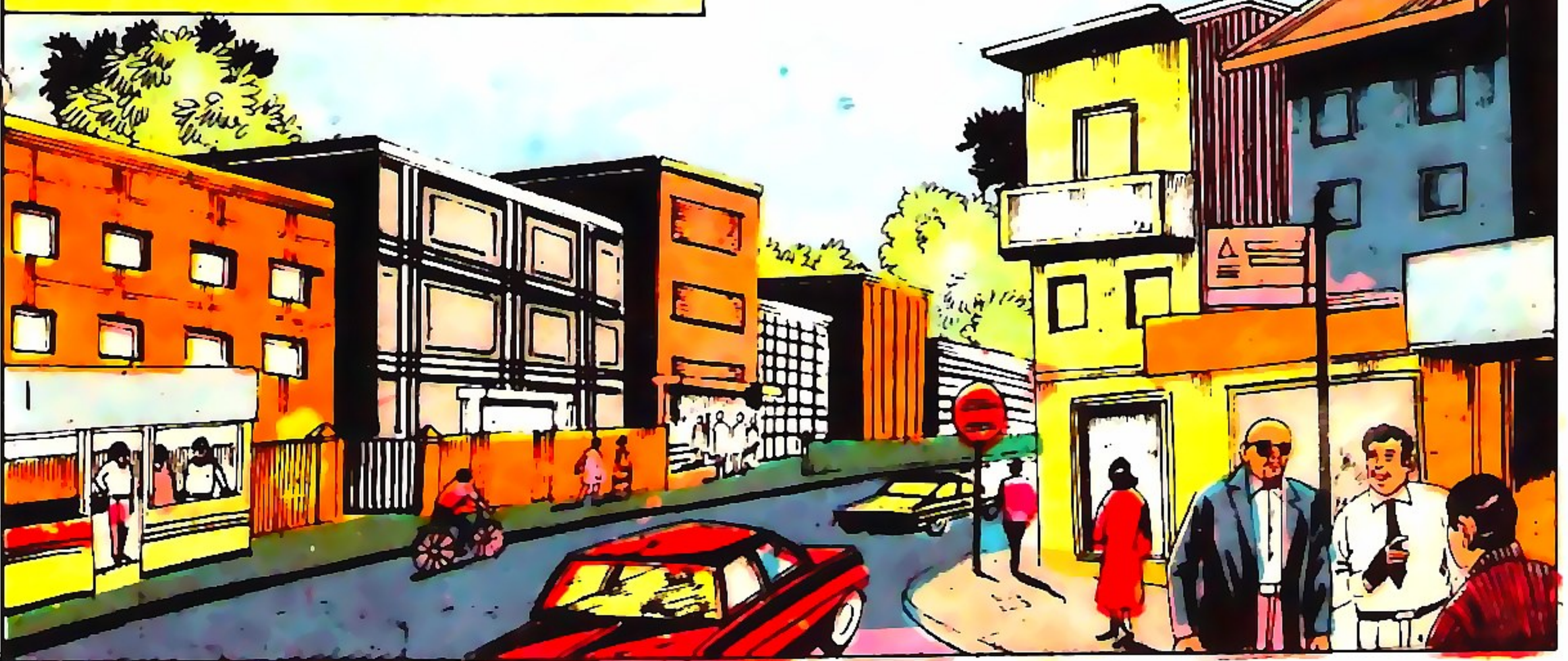
...एक शहर के भीड़-भाड़ वाले बाजार में लोग-बाग खरीदारी करके तेज गर्मी से बचने के लिये जल्द-से-जल्द अपने-अपने घरों में पहुंच जाना चाहते थे। तभी अचानक चारों ओर अंधेरा छा गया और लोगों की आश्चर्य-चकित निगाहें अनायास ही आकाश की ओर उठ गईं।
अरे! यह क्या? दिन में रात हो गई!
हे भगवान्! चांद और तारे भी निकल आये हैं!

लगता है कोई आफत आने वाली है!
मैं तो भाग कर अपनी जान बचाऊं!

आश्चर्य है, बादल की एक छोटी-सी टुकड़ी ने सूरज को अपने पीछे छिपा लिया और रात जैसा वातावरण कर दिया!
मुझे लगता है कोई भयानक खतरा हमारे देश पर मंडरा रहा है, क्या यह कमाल बादल की एक आवारा टुकड़ी नहीं दिखा सकती!
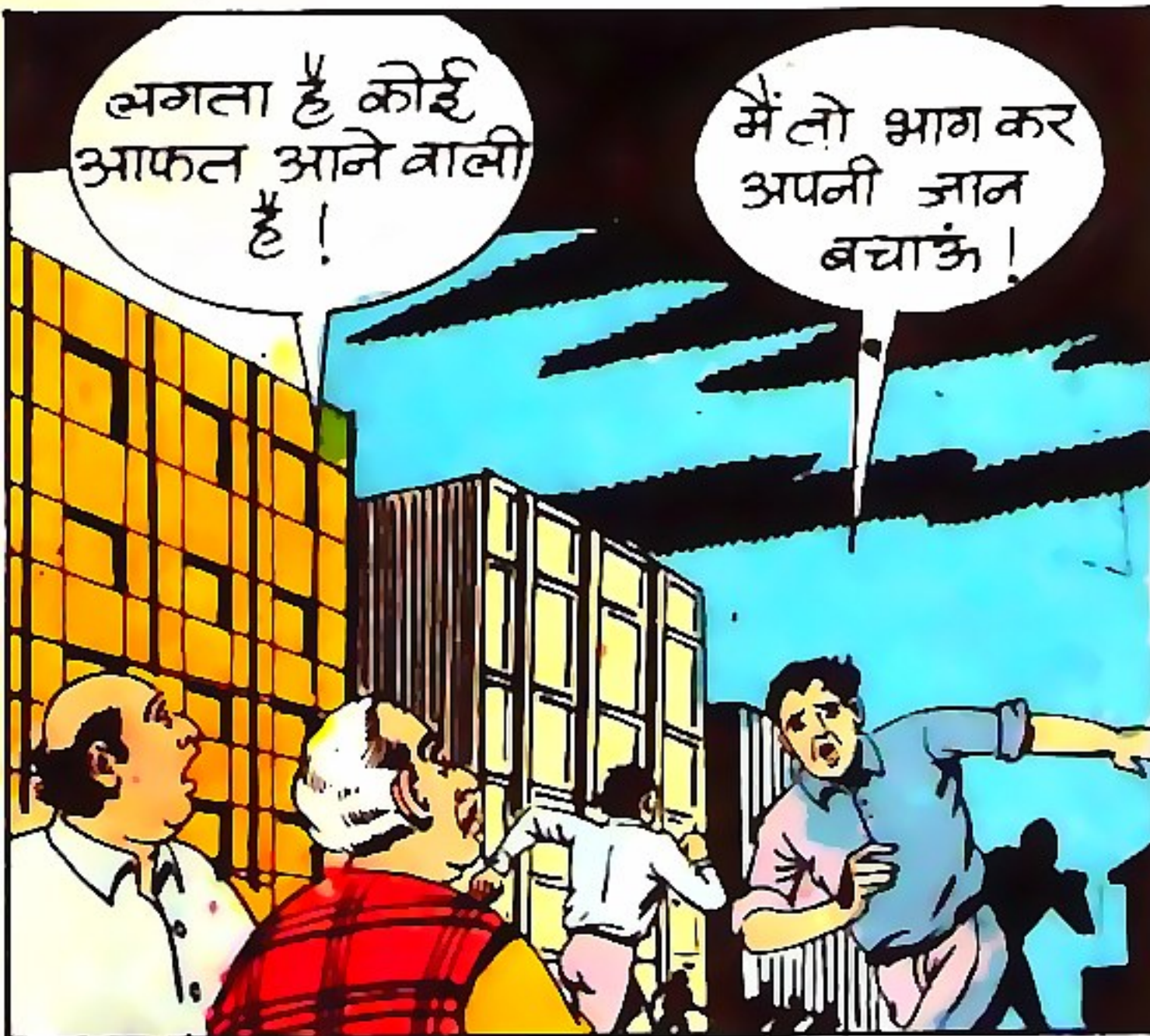
तभी पास की ही एक दुकान पर रेडियो में बजने वाला गीत रुक गया और उसमें से एक संदेश प्रसारित होने लगा। लोग-बाग आश्चर्य से ठगे वह संदेश सुनने लगे।
भारत वासियो, मेरी चेतावनी ध्यान से सुन लो! मेरा नाम ब्लैक ड्रेगन है। मैं सारी दुनिया को फतह कर विश्व सम्राट बनने के लिये पैदा हुआ हूं...
!!!
???

...मेरा एक अद्भुत कारनामा तुम सब इस समय देख रहे होगे। यह मेरा एक छोटा-सा परीक्षण है। वैसे यदि मैं चाहूं तो अभी हमेशा-हमेशा के लिये पूरी पृथ्वी को सूर्य से विहीन कर तुम सबको मौत के घाट उतार सकता हूं, लेकिन मैं ऐसा नहीं करना चाहता और भारत सरकार को सलाह देता हूं कि वह एक माह के भीतर-भीतर मुझे भारत का शासक घोषित कर दे, वरना मेरा अगला कदम बहुत ही खतरनाक होगा। नमस्कार!
???
!!!
टेलिविजन पर भी वह सन्देश प्रसारित हो रहा था।
ब्लैक ड्रेगन के संदेश के समाप्त होने के साथ ही सूर्य पर छाया वह बादल का टुकड़ा हट गया और सूर्य पुनः आकाश में चमकने लगा, परन्तु उस चेतावनी के सुनने वालों के चेहरों पर सन्नाटा छा चुका था।
अरे, देखो सूर्य निकल आया!
हे भगवान्! अब क्या होगा? यदि उसने वास्तव में सूर्य को हमेशा-हमेशा के लिये पृथ्वी से जुदा कर दिया तो प्रलय आ जायेगी!
मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा! ईश्वर ही जाने क्या होने वाला है!

आप वास्तव में महान हैं महामहिम!

प्रोफेसर, जब तुम्हारा आविष्कार पूरा हो जायेगा तो इन्सान तो क्या, भगवान भी मुझे अपने से ज्यादा महान समझने लगेगा। आओ अब चलें!

लेकिन राम-रहीम को काटो तो खून नहीं था। उनके दिल और दिमाग में एक भयानक तूफान हिलोरें ले रहा था।

यदि वास्तव में इसके पास इतनी जबरदस्त शक्तियां हैं तो दुनिया को बरबादी से बचाना कठिन हो जायेगा! हे ईश्वर! हमारी मदद कर!

- क्या राम-रहीम ब्लैक ड्रेगन को पृथ्वी पर प्रलय मचाने से रोक पाये?
- ब्लैक ड्रेगन की धमकी का प्रभाव भारत सरकार पर क्या पड़ा? क्या भारत सरकार ने जनता की जान-माल की सुरक्षा के लिये देश की बागडोर ब्लैक ड्रेगन के हवाले कर दी?
- नकाब के पीछे छिपा ब्लैक ड्रेगन वास्तव में कौन था?
- क्या प्रो० शर्मा ने अपना आविष्कार पूरा कर ब्लैक ड्रेगन के हवाले कर दिया?
- इन सब प्रश्नों के उत्तर जानने के लिये मनोज चित्रकथा के आगामी सैट में पढ़ें—

"विश्वसम्राट ब्लैक ड्रेगन"

मुद्रक : गोयल आफसैट वर्क्स, दिल्ली